अध्याय 2

कथक नृत्य के घराने

घराना

घराना शब्द से अभिप्राय, किसी शैली, परंपरा, पंथ अथवा शाखा से है। आंग्ल भाषा में इसे 'स्कूल' तथा दक्षिण में 'संप्रदाय' कहा जाता है। किसी एक घराने में अन्य घराने से कुछ भिन्न तत्व अवश्य होते हैं। इन्हीं भिन्न तत्वों के प्रति निष्ठा घराने की जीवंतता बन जाती है। संगीत की प्रत्येक शैली में घराने उपलब्ध हैं।

ख्याल गायन में – ग्वालियर, आगरा, किराना, पटियाला.....

ध्रुपद में बाणियां– गोबरहार, खंडार, डागुर, नोहार

ठुमरी में – पूरब अंग, पंजाब अंग

तबला में – अजराड़ा, फर्रूखाबाद, पंजाब....

कथक में – जयपुर, लखनऊ, बनारस, रायगढ़ घराने आदि

कला के किसी एक विषय अथवा शैली में, उसके सौंदर्य के विभिन्न आयामों में से किसी एक या कुछ आयामों पर कोई व्यक्ति इतना अधिक कार्य करें, कि उसका वह पक्ष अन्य से अलग तथा मूल कला अथवा शैली के प्रभाव में अभिवृद्धि करे साथ ही उसके शिष्य–प्रशिष्य भी उसका अनुसरण करे तो वह घराना कहलाएगा।

विद्यार्थी इसे यूं भी समझ सकते हैं– एक कस्बे/शहर में कुछ विद्यालय हैं, सभी में समान पाठ्यक्रम, समान पुस्तकें, अच्छे अध्यापक व श्रेष्ठ अनुशासन, परिणाम आदि समान विशेषताएँ हैं। लेकिन एक

विद्यालय सांस्कृतिक गतिविधि में श्रेष्ठ है, दूसरा खेलकूद में, तीसरा प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में, चौथा सामाजिक सहभागिता में । शिक्षा की गुणवत्ता कायम रखते हुए किसी एक अन्य गतिविधि का उत्कृष्ट प्रदर्शन उस विद्यालय की निजी विशेषता व अन्य से अपने आप को अलग बनाती है और समाज में सभी को आकर्षित करती है।

संगीत के घरानों में भी कला के उच्च प्रतिमानों को कायम रखते हुए किसी एक अंग की प्रबलता उसे अन्य से भिन्न बनाती है। कथक के जयपुर घराने में वीर रस की प्रधानता व भक्तिभाव से ओत–प्रोत स्वरूप वहीं लखनऊ घराने में नज़ाकत व नफासत तथा श्रृंगारिक ठुमरियों का प्रयोग एक नृत्य शैली होते हुए भी आंतरिक विशेषताओं में भिन्नता अथवा प्रबलता के कारण अलग घराने का अस्तित्व निर्माण करती है।

जयपुर घराना

''हिन्दु राज दरबारों में कथक के जिस स्वरूप का विकास हुआ उस शैली को जयपुर घराने का नाम दिया गया है।''

–डॉ. गीता रघुवीर, कथक नृत्य शास्त्र

शर्मिला शर्मा एवं पं. राजेन्द्र गंगानी

राजपूतकाल में जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, टोंक, बूंदी आदि समस्त दरबारों में संगीत व नृत्य को प्राश्रय मिला तथा उच्च श्रेणी के गुणी संगीतकार व नृत्यकार दरबारों में नियुक्त किए गए। जयपुर का गुणीजन खाना इन सबका केन्द्र रहा। अतः संगीत व नृत्य की इस शैली को 'जयपुर घराना' के नाम से जाना गया, जिसको आश्रय व विकास महाराजा सवाई जयसिंह, सवाई रामसिंह द्वितीय, माधोसिंह द्वितीय के काल में प्राप्त हुआ।

कथक के जयपुर घराने के प्रवर्तक भानुजी थे तथा तांडव शैली के अधिपति थे। इनके पौत्र कानूजी ने लास्य अंग भी ग्रहण किया। इस परंपरा में हनुमान प्रसाद जी, हरिप्रसाद जी, चिरंजीलाल जी तथा दूसरी शाखा में चुन्नीलाल जी, जयलाल जी, सुंदर प्रसाद जी कुंदनलाल गंगानी जैसे महान कथकाचार्य हुए। हनुमान प्रसाद व हरिप्रसाद को 'देवपरि की जोड़ी' नाम से जाना जाता था। जयपुर घराने की अनेक शाखाऐं हैं। कक्षा 11 के स्तर पर यहां निम्न शाखाओं का विवरण प्रस्तुत है।

(1) परंपरा –

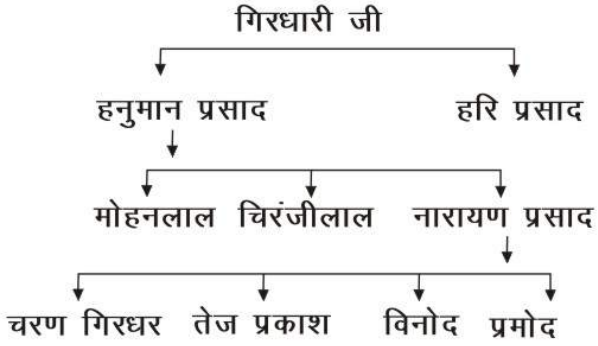

(2) परंपरा –

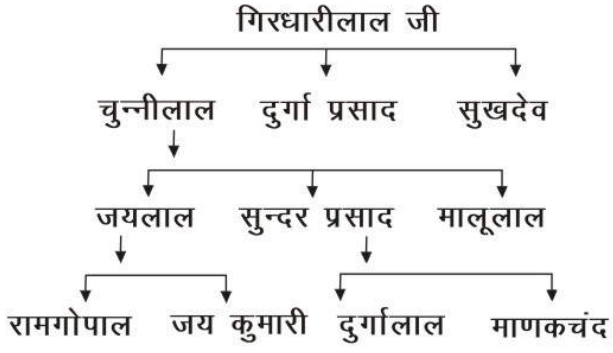

(3) परंपरा –

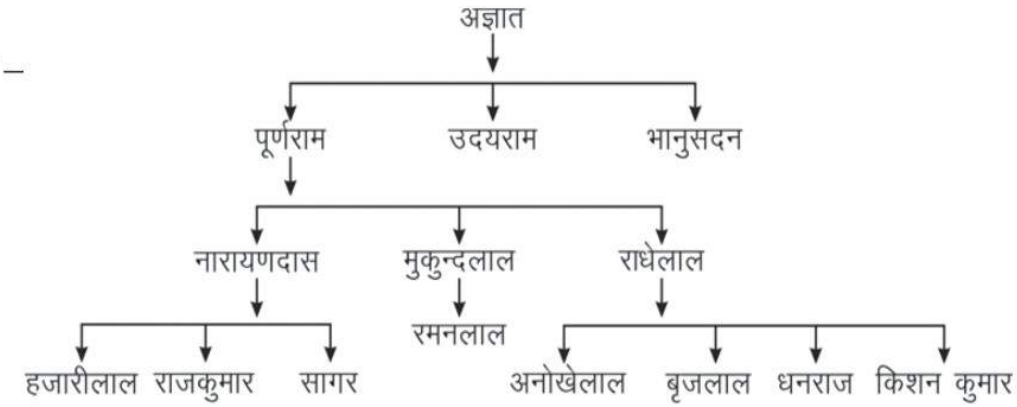

जयपुर घराने की विशेषता

1. भक्ति व श्रृंगार रस भाव युक्त
2. लय के चमत्कारी स्वरूप का प्रदर्शन
3. राजपूताने का ओजपूर्ण प्रभाव
4. कवित्त, भ्रमरी व तकनीक में क्लिष्टता का समावेश
5. चमत्कार प्रदर्शन

लखनऊ घराना

''मुगल शासकों के दरबार में कथक नृत्य के जिस स्वरूप का विकास हुआ, सामान्य तौर पर उसी स्वरूप को लखनऊ घराने के नाम से जाता जाता है।''

–डॉ. गीता रघुवीर, कथक नृत्य शास्त्र

इस वक्तव्य का केन्द्र 'नवाब वाज़िद अली शाह' तथा लखनऊ की हवा में तैरती लखनवी नज़ाकत, तहजीब व नफ़ासत को माना जा सकता है ।ईश्वरी प्रसाद जी इस परंपरा के मूल पुरूष माने जाते हैं। इने प्रपौत्र ठाकुर प्रसाद जी, नवाब वाज़िद अली शाह के गुरू थे। इन्होंने ही कथक को नटवरी नृत्य नाम दिया था। ठाकुर प्रसाद जी के पुत्र बिंदादीन महाराज कृष्ण भक्त, अद्भुत नृत्याचार्य तथा रचनाकार थे। इनकी परंपरा में अच्छन महाराज, लच्छू महाराज, शंभू महाराज, कृष्ण मोहन, राम मोहन तथा एक विशाल शिष्य परंपरा है। लखनऊ परंपरा के संवाहक व घराने के प्रतिष्ठित कलाकार पं. बिरजु महाराज हैं।

लखनऊ घराने की विशेषताऐं

1. ठुमरी प्रधान प्रदर्शन
2. लख्नवी नज़ाकत की अदायगी

3. सलामी की प्रस्तुति
4. शृंगारिकता (लास्य) का महत्त्व
5. नटवरी बोलों का प्रयोग व छोटी–छोटी बंदिश

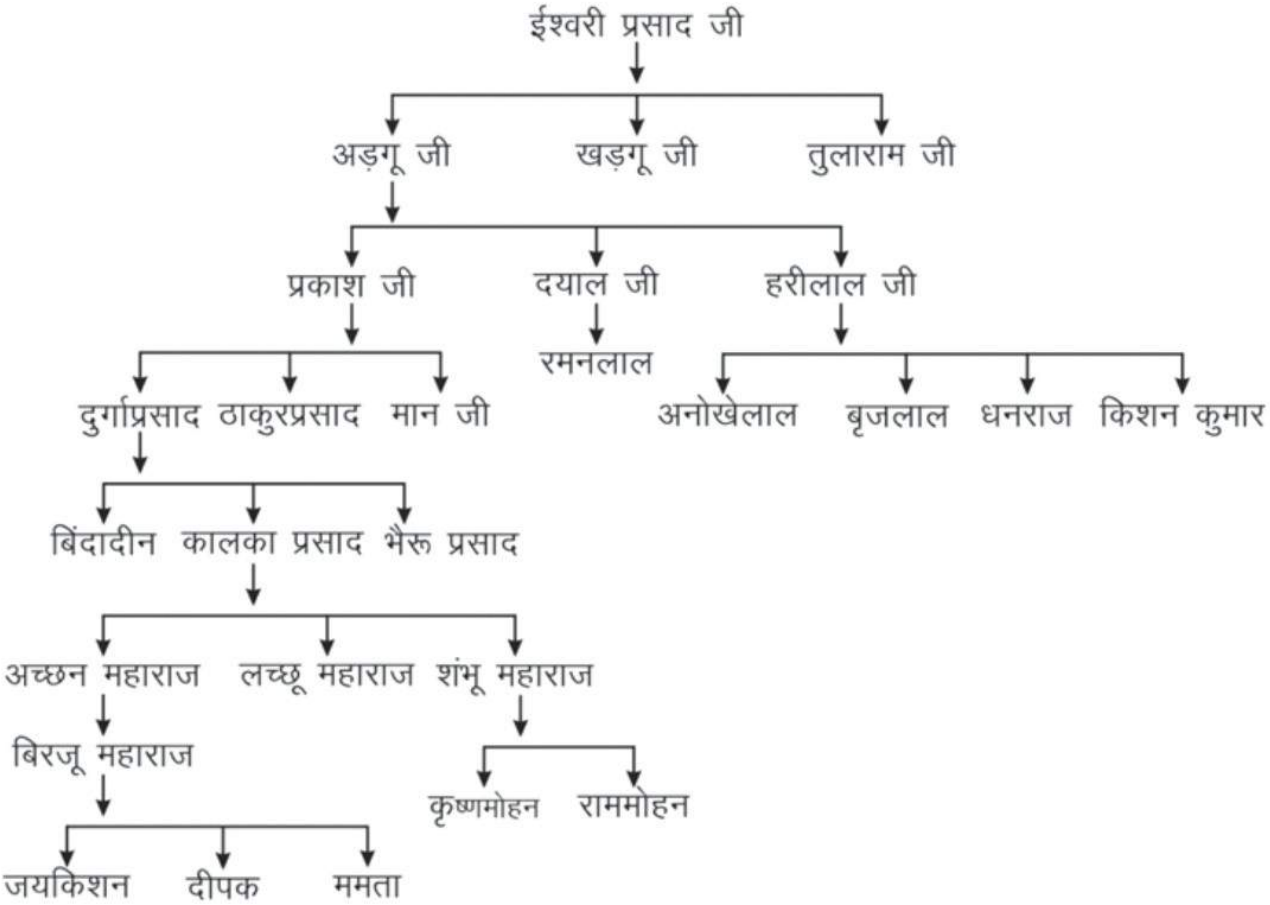

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- घराने से अभिप्राय परंपरा, पंथ, शैली, संप्रदाय से है।
- कथक नृत्य में मुख्यतः जयपुर, लखनऊ, बनारस प्रमुख घराने हैं।
- घरानों में अपनी–अपनी शैलीगत विशेषताओं का संरक्षण कायम रहता है।
- जयपुर घराना ओज, भक्ति, लय चमत्कार, भ्रमरी आदि के कारण विशिष्ट है।
- हनुमान प्रसाद जी, हरिप्रसाद जी, चिरंजीलाल जी, जयलाल जी, सुंदरप्रसाद जी, नारायणप्रसादजी, आदि जयपुर घराने के महान कथकाचार्य हुए हैं।
- बिंदादीन महाराज, अच्छन महाराज, लच्छू महाराज, शंभू महाराज आदि लखनऊ घराने के श्रेष्ठ नृत्य आचार्य हुए हैं। बिरजू महाराज लखनऊ परंपरा के वर्तमान प्रतिनिधि हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुवैकल्पिक प्रश्न

1. दक्षिण भारत में घराने को क्या कहा जाता है ?
   (अ) स्कूल (ब) संप्रदाय (स) बानी (द) पंथ
2. जयपुर घराने की विशेष पहचान है ?
   (अ) भ्रमरी (ब) नजाकत (स) सलामी (द) नटवरी
3. नवाब वाजिद अली शाह के नृत्य गुरू कौन थे ?
   (अ) बिंदादीन महाराज (ब) पंडित जयलाल (स) ठाकुर प्रसाद जी (द) अच्छन महाराज
4. अच्छन महाराज के पुत्र का क्या नाम है ?
   (अ) लच्छू महाराज (ब) शंभू महाराज (स) बिरजू महाराज (द) दीपक महाराज
5. विख्यात नृत्यांगना 'जयकुमारी' के गुरू कौन थे ?
   (अ) चुन्नीलाल जी (ब) जयलाल जी (स) अनोखेलाल जी (द) चिरंजीलाल जी

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. 'घराने' से अभिप्राय समझाइये ?
2. जयपुर घराने की विशेषताऐं बताइये ?
3. लखनऊ घराने की विशेषताऐं लिखिये ?
4. लखनऊ घराने की वंशावली लिखिये ?
5. जयपुर घराने की वंशावली लिखिये ?
6. जयपुर एवं लखनऊ घराने के किन्हीं दो दो कलाकारों के नाम लिखिए।

उत्तर–1–ब, 2–अ, 3–स, 4–स, 5–ब

शिक्षकों हेतु अनुदेश

- कलाकारों के वीडियो दिखाकर तुलनात्मक रुप से घरानों की विशेषताऐं स्पष्ट करनी चाहिए।
- घरानेदार प्रसिद्ध कलाकारों के कुछ संस्मरण, रोचक व प्रेरणादायक प्रसंग द्वारा वंश परंपरा आदि का ज्ञान करवाया जा सकता है।
- घरानेदार संगीत समारोह, कार्यक्रम आदि में विद्यार्थी की उपस्थिति सुनिश्चित करावें।